श्री अहिच्छत्र

पार्श्वनाथ

पूजन संग्रह

सम्पादक – कविवर 'शशि', रामपुर राज्य

पुस्तक का मूल्य
श्री पार्श्व - भक्ति मात्र

१९४०

अहिछत्र पुस्तकमाला ४

श्री अहिछत्र पार्श्वनाथ पूजन संग्रह

सम्पादक
कविवर 'शशि'

प्रकाशक
सीताराम जैन बज़ाज
रामपुर स्टेट.

धर्मप्रेमी बन्धुओं !

यह पार्श्वनाथ पूजन संग्रह उपस्थित है। आशा है पार्श्वनाथ भक्तों के लिये यह प्रेरणात्मक तथा सुविधाजनक सिद्ध होगा।

पार्श्वनाथ साहित्य अभी नहीं ही के बराबर प्रकाश में आया है। हमारी हार्दिक इच्छा है हम पूजन ही नहीं बल्कि अधिक से अधिक पार्श्व-साहित्य भी प्रकाश में लायें।

हमारे पास इस सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण चीज़ें प्रकाशन के लिए मौजूद हैं। यदि धर्मात्मा दानी इधर ध्यान देंगे तो वह शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेंगी। जिन्होंने यह पूजन संग्रह अपने धन से छपवाने की उदारता दिखलाई है, हम उनके विशेष आभारी हैं, और उन्हें अनेकानेक धन्यवाद देते हैं।

समाज का विनम्र सेवक,

सीताराम जैन बज़ाज

यह पुस्तक

बाबू दीपचन्द्रजी सुपुत्र

लाला मिट्ठनलाल जी जैन

ज़मींदार सरधना (मेरठ) के

दान से रविव्रत उद्यापन के

उपलक्ष में प्रकाशित

हुई है ।

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ

दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र रामनगर

का

संक्षिप्त परिचय

धर्मप्रेमी सज्जनो !

यह वही परम पवित्र प्राचीन तीर्थक्षेत्र है जिसको श्रीमद्देवाधिदेव १००८ श्री पार्श्वनाथ तेईसवें तीर्थङ्कर ने अपनी उग्र तपस्या से पवित्र बनाया है। इसी स्थल पर पूर्व भव के वैरी कमठ के जीव ने भगवान् पर महाभयानक और रोमांचकारी घोर उपसर्ग किया था। उस भीषण असह्य उपसर्ग के होने से देवों के आसन कम्पायमान हो गए। अवधि ज्ञान द्वारा भगवान् पर महान् उपसर्ग जानकर उसी समय धरणेन्द्र पद्मावती देवी सहित वहाँ आये और भगवान् के शीश पर फण मण्डप रचा। प्रभु ने पूर्ण शान्ति और धैर्य्य सहित उपसर्ग पर विजय पा, तत्काल ही घातिया कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया। इसी स्थल पर कुबेर कृत समवशरण की मनोहर रचना हुई और अनन्त भव्य जीवों का दिव्योपदेश द्वारा कल्याण हुआ।

इसी अहिच्छत्र पर फण मण्डप में पद्मावती देवी रचित अनुमान के लक्षण का श्लोक पढ़कर पात्रकेशरी जी जैसे उद्भट विद्वान् की जैन धर्म विषयक शङ्का निवारण होकर सम्यक्त्व का पूर्ण उद्योत हुआ और फिर स्वयं पात्रकेशरी जी ने ही अपने ५०० शिष्यों को वाद-विवाद द्वारा जैनधर्म पर श्रद्धान कराया तथा सर्वत्र जैन धर्म सम्बन्धी अपूर्व प्रभावना की।

यहाँ अत्यन्त प्राचीन भव्य और विशाल शिखरबन्द जिन मन्दिर है। इसमें पाँच वेदियाँ हैं, जिसमें एक पर श्रीमद्देवाधिदेव १००८ श्री पार्श्वनाथ भगवान् के चरणचिह्न हैं और चार पर विशालकाय सातिशय प्राचीन प्रतिबिम्ब (जिन पर कोई सम्वत् नहीं) भगवान् पार्श्वनाथ, शीतलनाथ, पंच बालयती, चन्द्रप्रभु, महावीर भगवान् और वर्तमान चौबीसी आदि विराजमान हैं। यह तपोभूमि अत्यन्त शान्त और रमणीक है।

मन्दिर के बाहर एक विशाल दोमंजिली धर्मशाला है, इसमें हजारों यात्री ठहर सकते हैं। मन्दिर और धर्मशाला के चारों ओर विशाल उद्यान है, जिनमें मेले पर यात्रियों के ठहरने के लिए डेरा, तम्बू वगैरह का प्रबन्ध कमेटी द्वारा किया जाता है। यात्रियों के लिए पूजन सामग्री, भोजन और बर्तनों आदि का समुचित प्रबन्ध रहता है।

क्षेत्र के विशाल कुएं का जल भी अतिशय संयुक्त है, जिसके सेवन करने से अनेकों रोग शान्त होते हैं। यह प्रसिद्ध है कि आसपास के पुराने राजा और नवाब इसी कुएं का ही जल सेवन किया करते थे। अब भी दूर-दूर के जैनाजैन यात्री इस कुएं का जल अपने साथ लेजाते हैं। स्वास्थ्य-विज्ञान की दृष्टि से भी यहां का जलवायु अत्यन्त हितकर सिद्ध हुआ है।

मुख्य द्वार के सामने ही कुछ दूरी पर "पांचालों" के समय का क़िला नजर आता है, इसका घेरा लगभग साढ़े तीन वर्ग मील है, जिसका भग्नावशेष अब भी अवशिष्ट है। इसके अन्दर एक टीले पर विशाल शिला है जो "भीमशिला" के नाम से विख्यात है। इस क़िले के खण्डहरों में उस समय के सोने, चांदी आदि अनेक धातुओं के सिक्के बरसात के दिनों में अब भी प्राप्त

होते रहते हैं। इसमें प्राचीन खण्डित दिगम्बर जैन मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं, जिनको ग्रामीण ग्रामदेवता के नाम से अब भी पूजते हैं।

सन् १८६८ में पुरातत्व-विभाग के अफ़सर माननीय फ़ोरहर साहब द्वारा एक टीले की खुदाई होने पर एक विशाल प्रतिबिम्ब और एक पत्थर प्राप्त हुआ था, उस पत्थर पर "जैन क्रीड़ालय" खुदा हुआ था। यह दोनों वस्तुएं उसी समय सरकारी म्यूज़ियम में चली गईं थीं।

हाल ही में पुरातत्व-खोजी महान विद्वान् सर लिओ वुडउली ने इस क़िले का निरीक्षण किया है तथा बी० एल० वरसिली मजिस्ट्रेट को पुराने सिक्के मिले हैं। जिनकी जांच करने पर विदित हुआ कि यह "पांचालों" के समय के हैं। महाभारत के समय में यह कुरु या पांचालों की राजधानी थी। इसी आधार पर भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग की ओर से १६ जनवरी सन् १६३६ की 'अमृत बाजार पत्रिका' में प्रकाशित हुआ है—श्री अहिच्छत्र तीर्थ पर शीघ्र ही खुदाई का कार्य होने वाला है। इस खुदाई में जैन धर्म सम्बन्धी अथाह प्राचीन मसाला मिलने की आशा है। इसके लिए कमेटी भी पूर्ण प्रयत्न कर रही है। इसे देखने के लिए समय समय पर अनेकों अंग्रेज़ और जैनेतर यात्री आते रहते हैं। समीपवर्ती जैनेतरों में तो विवाह के समय वर-वधू को इस क्षेत्र के दर्शन कराने की पुरानी प्रथा है।

एक शिखरबन्द जिन मन्दिर क्षेत्र के रामनगर गाँव में भी है जो सुन्दर और मनोज्ञ है। यहाँ पर एक श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला है और उसमें धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

इस तीर्थराज के दर्शन कर भव्य जीवों के हृदय-कमल हर्ष से ओत-प्रोत हो, विकसित हो जाते हैं। पूर्वकाल में जिस प्रकार भगवान् का ज्ञान कल्याणक मनाने के लिए देवगण आते थे। उसी प्रकार अब उस पुण्यस्मृति में प्रतिवर्ष चैत्र वदी ८ से चैत्र वदी १२ तक बड़ा भारी मेला होता है, इसमें बहुत दूर-दूर के यात्री एकत्रित होकर पुण्योपार्जन करते हैं।

अत: प्रत्येक महानुभाव को इस क्षेत्र के अवश्य दर्शन करके पुण्य संचय कर पर्याय को सफल बनाना चाहिए।

श्रीपार्श्वनाथ जिन पूजा ।

अडिल्ल—पारस मेरु समान ध्यान में थिर भये ।
कमठ किये उपसर्ग सबै छिन में जये ।।
ज्ञान भान उपजाय हानि विधि शिव वरी ।
आह्वानन विधि करूं प्रणमि त्रिविधा करी ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट ।

गीता छन्द ।

शरद इन्दु समान उज्जल स्वच्छ चित मुनि सारसौं ।
शुभ मलयमिश्रित भृङ्ग भरिहूं शीत अति ही तुसारसौं ।।
सो नीर मनहर तृषा नाशन, हिमन उद्भव ल्याय ही ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूँ हृदै हरष उपाय ही ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

घनसार अगर मिलाय कुंकुम, मलय संग घसाय ही ।
अतिशीत होय सनेह उस्न जु, बूंद एक रलाय ही ।।
सो गंध भवतपनाश कारन, कनक भाजन ल्याय ही ।।श्रीपा०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।

सरित गङ्गा अंबु सींची, सालि उज्जल अति घनी ।
दुति धरै मुक्ता की मनोहर, सरल दीरघ जुत अनी ।।

सो अछित औघ अखण्ड कारन, अखै पदकूं ल्याय ही ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा ।

कनकनिर्मय रतन जड़िये, पंच वरन सुहावने ।
प्रसूत सुन्दर अमर तरुके, गन्धजुत अति पावने ॥
सो लेय समर निवारकारण, घ्राण चक्खि सुहायही ॥श्री१०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

लछिमी निवास सरोज उद्भव, तथा सोमथ की भरै ।
आमोद पावन मिष्ट अति चित, अमी भुंजन को हरै ॥
सो चारुरसनैवेद कारण, क्षुधा नाशन ल्याय ही ॥ श्रीपा०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा ।

कनक दीप मनोग मणिमय, भानभासुर मोहने ।
तम नसै ज्यौं घन पवन नासै, धूमवर्जित सोहने ॥
मम मोह निविड विध्वंस कारण लेय जिनग्रह आयही ॥श्रीपा०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० स्वाहा ।

श्रीखण्ड अगर दशांग धूप, सुकनक धूपायान भरैं ।
आमोदतैं अलिवृन्द आवैं गूंजतैं मनकूं हरैं ।
वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण, अग्नि संग जराय ही ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०स्वाहा

अति मिष्ट पक्व मनोग्य पावन, चक्खि घ्राणनकूं हरै ।
अलि गुंज करत सुगन्ध सेती, क्षुधाकी सरभरि करै ॥
सो फल मनोहर अमरतरुके, स्वर्णथाल भरायही ॥ श्रीपा०॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा

सलिल सुच्छ सु अगर चंदन अछित उज्जल ल्यायही ।
वर कुसुम चरुतैं क्षुधा नाशै, दीप ध्वान्त नसाय ही ॥
करि अर्घ धूप मनोग्य फल लै, राम सिवसुख दायही ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदै हरष उपाय ही ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक ।

दोहा—प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार ।
दोज असित बैसाख ही, लयो जजूं पद सार ॥
ओं ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

पौह कृष्ण एकादशी, तीन ज्ञानजुत देव ।
जनमैं हरि सुर गिरि जजे, मैं जजहूं करि सेव ॥२॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

दुद्धर तप सुकुमार वय, काशी देश विहाय ।
पोह कृष्ण एकादशी, धर्यो जजूं गुण गाय ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णैद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

कृष्ण चौथि शुभ चैत की, हने घाति लहि ज्ञान ।
कह्यो धर्म दुविधा मुदा, जजूं बोध भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैतकृष्ण चतुर्दश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि० ।

सप्तमि श्रावण शुकल ही, शेष कर्म हनि वीर ।
अविचल शिवथानक लयो, जजूं चरण धर धीर ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि० ॥

जयमाला ।

दोहा—पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल जुगसार ।
प्रचुर भवार्णव तुम हर्यो, मुझ तारो भव तार ॥ १ ॥

चाल—ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरहु पातक पीर ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र, बन्दूं, शुद्ध मन वच काय । धनि धन पिता अश्वसेन जी, धनि धन्य वामा माय ॥ धनि जनम काशी देश में बानारसी शुभ ग्राम । प्रभु पास द्यौ मुझ दास की सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १ ॥ अतिशय मनोहर सजल जलद समान सुन्दर काय । मुख देखिके ललचाय लोचन नैक तृपति न थाय ॥ पदकमलनखदुतिकवल चपलाकोटिरवि छवि स्याम । प्रभुपास० २ है अधोमुख पंचाग्नि तपतो कमठ को चर कूर । तित अगनि जरते नाग बोधे देव बच वृष पूर ॥ वे भये है धरनेन्द्र पदमा भवनत्रिक रिधि धाम । प्रभु पास० ॥ ३ ॥ इम उरग मरत निहारकें सब अथिर शरन न जोय । संसार यो भ्रमजाल है जिम चपल चपला होय ॥ हूँ एक चेतन सासतो शिव लहूँ तज कैं धाम । प्रभु पास० ॥ ४ ॥ इम चितवतां लोकांतके सुर आय पूजे पाय ।

परगाम करि संबोधि चाले चितवते गुण ध्याय । धनि धन्य वय सुकुमारमें तप धरयो अतिबल धाम । प्रभु पास० ॥ ५ ॥ बंदू समैं जिन धरी दीक्षा विहरि अहिछत्त जाय । तित ठये वनमैं दुष्ट वो सुर कमठको चर आय ॥ अतिरूप भीषण धारिकैं फुंकार पन्नग स्याम । प्रभु पास० ॥ ६ ॥ है तुंग वारण सिंघ गरज्यौ उपलरज बरसाय । करि अगनि बरषा मेघ मूसल तड़ित परलय वाय ॥ प्रभु धीर वीर अत्यन्त निरभय असुर को बल खाम । प्रभु पास० ॥ ७ ॥ वाही समै धरणेन्द्रको नय मुकुट कंप्यो पीठ । हरि आय सिंघासन रच्यौ फणमण्ड कीनों ईठ ॥ तब असुर करनी भई निरफल अचल जिन जिम धाम ॥ प्रभु पास० ॥ ८ ॥ धरि ध्यान जोग निरोधिकैं चउघाति कर्म उपारि । लहि ज्ञान केवलतैं चराचर लोक सकल निहारि ॥ समवादि भूति कुवेर कीनी कहै किम बुद्धि खाम । प्रभु पास० ॥ ९ ॥ हरि करी नुति कर जोरि विनती धन्य दिन इह बार । धनि घड़ी यह प्रभु पास जी हम लहैं भवकी पार ॥ धनि धन्य वानी सुनी मैं अघनासनी पुनि धाम ॥ प्रभु पास० ॥ १० ॥ वसु कर्म नाशि विनासि वपु शिवनयरि पाई धीर । वसु द्रव्यतैं वह थान पूजे टरैं सबही पीर ॥ सो अचल है सम्मेदपैं मम भाव हैं वसु जाम । प्रभु पास० ॥ ११ ॥ कर जोरकें "रामचन्द" भाषैं अहो धनि तुम देव । भवि बोधिकैं भवसिंन्धु तारे तरन तारन टेव ॥ मैं नमत हूँ मो तारि अबही ढील क्यों तुम काम । प्रभु पा० ॥ १२ ॥ निति पढ़ैं जे नर नारि सब ही हरैं तिनकी पीर । सुर लोक लहि नर होय चक्री काम .हलधर वीर ॥ फुनि सर्व कर्म जु घाति कैं लहि मोख सब सुख धाम । प्रभु पास यौ मुझ दास की सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्बपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्त ॥

श्रीपार्श्वनाथ जिन पूजा ।

बख्तावरसिंह कृत

गीताछन्द

वर स्वर्गप्राणतकों विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये ॥ नव-
हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं । थापूं तुम्हे
जिन आय तिष्ठौ, करम मेरे सब नसैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपर्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव ।
वषट्

अथाष्टक—छन्द नाराच ।

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये । हेमपात्र धारि कैं
सु आपको चढाइये । पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये । आप चर्न
चर्च मोहताप को हनीजिये । पार्श्व० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनंनिर्वपामी०

फेन चन्द के समान अक्षतान लाइकैं, चर्न के समीप
सारपुंज को रचाइकैं ॥ पार्श्वनाथदेव० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामी०

केवड़ा गुलाब और केतकी सुनायकैं, धार चर्न के समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्वनाथ० ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्रायकामबाणविध्वंसनाय पुष्पंनिर्वपामी ॥

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने, आप चर्न चर्च ते क्षुधादि रोग को हनै ॥ पार्श्वनाथ० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायक्षुद्रोगविनाशनायनैवेद्यं निवपामी ॥

लाय रत्नदीप को सनेह पूरके भरूं, वातिका कपूर वारि मोह ध्वान्त को हरूं ॥ पार्श्वनाथ० ॥ ६ ॥

ओं ह्रींश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि०॥

धूप गंध लेयकैं सुअग्नि संग जारिये, तास धूप के सुसंग अष्टकर्म वारिये ॥ पार्श्वनाथ० ॥ ७ ॥

ओं ह्रींश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामी॥७॥

खारकादि चिरभटादि रत्नथाल में भरूं, हर्ष धारिकैं जजूं सुमोक्ष सौख्य को वरूं ॥ पार्श्वनाथ० ॥ ८ ॥

ओं ह्रींश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये अर्घं निर्वपामी॥८॥

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये, दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये ॥ पार्श्व० ॥ ९ ॥

ओं ह्रींश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये फलं निर्वपामी॥९

पंच कल्याणक। छन्दचाल।

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैसाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी॥

ओं ह्रीं वैसाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वजि०अ०

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ॥ २ ॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं ॥

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥
ओंह्रीं श्रीपौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं

वह कमठ जीव दुख कारी, उपसर्ग कियो अतिभारी ।
प्रभु केवल ज्ञान उपाया, अलि चैत चौथ दिन गाया ॥४॥
ओं ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ० अर्घं

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ अर्घं

पारसनाथ जिनेंद्रतने वच, पौनभखो जरतें सुन पाये ।
करयो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये ॥
नाम प्रताप टरै संताप सु, भव्यनको शिवशर्म दिखाये ।
हो अश्वसेनके नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरषाये ॥१॥

दोहा—केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहारपग, वंदूं पारसनाथ ॥

पद्धरी छन्द

रची नगरी छहमास अगार। बने चहुं गोपुर शोभ अपार।
सु कोटतनी रचना छवि देत। कँगूरनपै लहकै बहुकेत ॥२॥

बनारस की रचना जु अपार। करी बहु भाँति धनेश तयार।
तहां अश्वसैन नरेन्द्र उदार। करै सुख वाम सु दे पटनार
॥ ४ ॥ तज्यो तुम प्रानत नाम बिमान। भये तिनके घर
नन्दन आन। तबै सुर इन्द्र नियोगन आय॥ गिरिन्द्र करी
विधि न्हौन सु जाय॥ ५ ॥ पिता-घर सौंप गये निजधाम।
कुवेर करै बसु जाम सुकाम। बढ़ै जिन दूज मयंक समान।
रमैं बहु बालक निर्जर आन॥ ६ ॥ भये जब अष्टम वर्ष
कुमार। धरे अणुव्रत्त महासुखकार॥ पिता जब आन करी
अरदास। करौ तुम ब्याह वरौ मम आस ॥ ७ ॥ करूं
तब नाहिं कहैं जगचन्द। किये तुम काम कषाय जु मन्द॥
चढ़े गजराज कुमारन संग। सु देखत गङ्गतनी सुतरङ्ग॥८॥
लख्यो इक रंक करै तप घोर। चहुँदिशि अगनि बलै अति
जोर॥ कहैं जिननाथ अरे सुन भ्रात। करै बहु जीवन की
मत घात॥ ९ ॥ भयो तब कोप कहै कित जीव। जले
तब नाग दिखाय सजीव॥ लख्यो यह कारण भावन भाय।
नये दिव ब्रह्मरिषीसुर आय॥ तबहि सुर चार प्रकार
नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग॥ कियो वनमाहि
निवास जिनंद। धरे व्रत चारित आनँद कंद॥ ११ ॥
गहे तहँ अष्टम के उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास॥
दियो पयदान महा सुखकार। भयी पनवृष्टि तहां तिहिं
बार॥ १२ ॥ गये तब कानन माहिं दयाल। धरयौ तुम

योग सबहिं अघटाल ।। तबै वहधूम सुकेत अयान । भयो कमठाचर को सुर आन ।। १३ ।। करै नभ गौन लखे तुम धीर । जु पूरब बैर विचार गहीर ।। कियो उपसर्ग भयानक घोर । चली बहु तीक्षण पवन झकोर ।। १४ ।। रह्यो दसहूँ दिशि में तम छाय । लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय ।। सु रुण्डन के बिन मुंड दिखाय । पड़े जल मूसलधार अथाय ।। १५ ।। तबै पद्मावति-कंथ धनिन्द । नये जुग आय जहां जिनचंद ।। भग्यो तब रंक सु देखत हाल । लह्यो तब केवल ज्ञान विशाल ।। १६ ।। दियो उपदेश महा हितकार । सुभव्यन बोधि समेद पधार ।। सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध । वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ।। १७ ।। जजूँ तुम चरन दुहू कर जोर । प्रभू लखिये अब ही मम ओर ।। कहै बखतावर रत्न बनाय । जिनेश हमें भवपार लगाय ।।१८।।

घत्ता—

जय पारस देवं सुरकृत सेवं, बन्दत चर्न सुनागपती । करुणा के धारी पर उपगारी, शिवसुखकारी कर्महती ।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल—जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही । ताको दुख सब जांय भीत व्यापै नहिं कितही ।। सुखसंपति अधिकाय पुत्रमित्रादिक सारे । अनुक्रमसों शिव लहै, रतन इमि कहै पुकारे ।। २० ।। इत्याशीर्वादः

श्रीपार्श्वनाथ पूजा

मनरंगलाल कृत

गीता छन्द

नगरी बनारसि अश्वसेन सुपिता वामा मात है.
तजि स्वर्ग प्राणत पार्श्व स्वामी लसत नव कर गात[1] है.
इक्ष्वाकु वंशी भुजंग लक्षण वर्ष इकशत आव है,
घनश्याम इव तन धरत आभा देखि मो मन चाव है,

दोहा

हे पारस भगवान अब दयासिंधु गंभीर,
यहाँ आय तिष्ठो प्रभो उसरि जाय भवभीर,

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट्
(इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
(इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रममसन्निहितो भव भव वषट्
(इति सन्निधिकरणं)

छन्द त्रिभंगी

पन्नग ठकुराई सहजै पाई तुम बच सुनि के पवनभखी[2]
तिनकी ठकुराई कहिय न जाई प्रभु प्रभुताई यह सुलखी,
वामा के प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

---

(१) नौ हाथ का शरीर. (२) सर्प

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सो भुजंग गुसाई पुनि इत आई फण की छाई करत भली[१]
ताकरि मद हार्‌यौ कमठ विचार्‌यौ प्रभु ढिग धार्‌यौ सीस चली
वामा के प्यारे जग उजियारे गंध सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु केवल पावा आलविल आवा रूचिर बनावा समवश्रतम,
तामाहि बिराजे सूरज लाजे इभ छवि छाजे कहत श्रुतम्,
वामा के प्यारे जग उजियारे अक्षत सों थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

आसनते सूचे अंगुल ऊँचे चवचव आनन नाथ भये,
तिनते सुखदानी खिरत सुवानी सुनि भव प्राणी सुगति गये,
वामा के प्यारे जग उजियारे पुष्पसो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

---

(१) अच्छी प्रकार

कछु इच्छा नारी[1] विनि डगधारी होत विहारी[2] परम गुरू,
जिन प्राणिन केरा तरब[3] सवेरा[4] तितै नाथ मग होत सुरू,
वामा के प्यारे जग उजियारे चरुसो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु देशन माही प्रभु विहराही भवि जीवन संबोधि दये,
मिथ्यामत भारी तिमिर विदारी जिनमत जारी करत भये,
वामा के प्यारे जग उजियारे दीपसो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सो शविह तिहारी आनन्दकारी रोज हमारी पीर हरे,
जाकी दुति भारी जग विस्तारी दरसत कारी घननि दरे,
वामा के प्यारे जग उजियारे धूप सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसों,

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पारसस्वामी अन्तर्यामी हो बड़ नामी विश्वपती,
थारे गुण गाऊँ शीश नवाऊँ बलि बलि जाऊँ दे सुगती,

(१) निरिच्छक, (२) पाँव हिलाये बिना, आकाश गमन करते हुए, (३) तिरना, संसार से पार होना, (४) निकट अर्थात् निकट भव्य।

वामा के प्यारे जग उजियारे फल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और मवारे शिव दरसों,
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन शुभ अक्षत पुष्प सुहावने,
दीपक चरू वर धूप फलौघ[1] सुपावने[2],
ये बसु द्रव्य मिलाय अर्घ कीजै महा,
तुम पद जजत निहाल होत औ हित कहा,
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणकम्

वैसाखवदी दुतियाके दिन गर्भ रहे निज माके,
वामा उर आनन्द बाढे हम अर्घ चढावत ठाढे,
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैसाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घम्।

वदि पूष एकादशि जानी, प्रभु जन्म लिए सुखखानी,
करि अर्घ यहां हम ध्यावें मनवांछित सुख अब पावें,
ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा एकादश्यां जन्म कल्याणकाय अर्घम्।

लखि पौष एकादशि कारो, प्रभु ता दिन केश उपारो,
तप काज रहे वन माही, हम यहां पर अर्घ चढाही,

(१) फलों के ढेर, (२) पवित्र,

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा एकादश्यां तप कल्याणकाय अर्घम् ।

तिथि चैत्र चतुर्थी कारी, भे केवल पद के धारी,
इन्द्रादिक सेवन आये, हमहूँ यहां अर्घ चढाये,

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा चतुर्थ्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घम ।

सुदि सातैं श्रावण मासा, सम्मेद थकी गुण वासा,
लीन्ही शिव की ठकुराई, पद पूजत अर्घ चढाई,

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला सप्तम्यां निर्वाण कल्याणकाय अर्घम् ।

छन्द त्रिभंगी

जय पारस देवा आनन्द देवा सुरपति सेवा करत रहैं,
जयजय अरिहंता देह महन्ता ध्यावत संता दुख न लहैं,
जय दिगपटधारी[1] गगनविहारी, पापप्रहारी छवि सुथरी,
जयजय कुलमंडन विपतिविहंडन दुरमतिखंडन मुकति वरी,

छन्द पद्धडी

जय अश्वसेन कुलगगन चन्द, जय वामादेवी के सुनन्द ।
जय पासनाह[2] भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ।।१।।
जयदुरित[3] तिमिरनासनपतंग[4] जयभविककमल लखिहोतदंग[5]
जय पासनाह भवभीरटाल, करदे स्वामी अबके निहाल ।।२।।

(१) दिगम्बर, (२) पार्श्वनाथ, (३) संसार का दुःख, (४) सूर्य, (५) हर्षायमान ।

जय अजर अमर पद धरनहार, जय दुखी दुःख भंजन विचार।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥३॥
जय धारि पंचमा अमल[1] ज्ञान, पंचम[2] गति लीन्ही सो महान।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥४॥
जय पंचभाव धारन महंत, सिग भौ रोगन को करो अन्त।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥५॥
जय करत मुनीत पुनीत आप, जय दारिद भंजन नाथ जाप।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥६॥
जय सिद्धिसिला के वसनहार, जय ज्ञानमई चेतन प्रकार[3]।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥७॥
जय चिंतितार्थ फल देत रोज, जो ध्यावै ताको खोज खोज।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥८॥
जय धन्य धन्य स्वामी दयाल, जय दीनबन्धु तुम लोकपाल।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥९॥
जय तुम पद तर की रेणु अंग, जो धरे लहे सो छवि अनंग।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥१०॥
जय तुम कीरति छाई जहान, चहुधा[4] छटकी फूलन समान।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥११॥
तुम अकथ कहानी कथै जौन, काकी मती एती है सु कौन।
जय पासनाह भवभीर टाल, करदे स्वामी अबके निहाल ॥१२॥

---

(१) केवल शुद्ध (२) मोक्ष (३) आकार

निति थकत शेष१ से कथन गाय, नर दीनन को कह कथन आय
जय पासनाह भवभीर टाल, करिदे स्वामी अबके निहाल।१३।
जय करत अरज मनरंगलाल, हम पर किरपा निधि हो दयाल
जय पासनाह भवभीर टाल करिदे स्वामी अबके निहाल।१४।

छन्द शार्दूल विक्रीडित

या जयमाला पार्श्वनाथ जिनकी आनन्दकारी सदा
जो धारे निज कंठ भाव धरिके देखे ना नीचो कदा,
ऊंचे ऊँचे पद लहत नर सो ताकी कही का कथा,
पाछे भौ दधिपार लेय सुख सो आनन्द पावे जथा
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घं नि० ।

छन्द

जेते प्राणी मोहने बांधि डारे, औरोंके ते दुःख दीये नियारे।
तेते थारे पादकी आस लावे, जासौं जाकी शृङ्खला तोरिपावे।।

इत्याशीर्वादः।

"ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ।।

श्रीपंचबालयति तीर्थंकरपूजा भाषा।

दोहा।

श्रीजिनपंच अनङ्गजित, वासुपूज्य मलि नेम ।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजों चितधरि प्रेम ।। १ ।।

---

१ इन्द्र

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
(इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
(इतिस्थापनं)

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (सन्निधिकरणं)

(अथ अष्टक। चाल—द्यानतरायकृत नंदीश्वरद्वीपपूजा की)

शुचिशीतल सुरभिसुनीर, ल्यायो भरि झारी।
दुख जन्मन मरण गहीर, याको परिहारी॥
श्रीवासुपूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अती।
नमुं मनवचतनधरि प्रेम, पांचों बालजती॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यमल्लिनेमिपार्श्वनाथमहावीरपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपा० ॥

चन्दन केशर कर्पूर, जल में घिसि आने।
भवतपभञ्जनसमपूर, तुमको मैं जाने॥ श्रीवासु० ॥
(चन्दनं)

बर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे।
बहु देश देश के लाय, तुमरी भेंट करे॥ श्रीवासु०॥
(अक्षतान्)

इह काम सुभट अति शूर, मन में क्षोभ करे।
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरे॥ श्रीवासु०॥
(पुष्पं)

षट रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी।
द्व कर्मवेदिनी छेद, आनन्द है भारी॥ श्रीवासु० ॥

(नैवेद्यं)

धरि दीपक जगमग जोत, तुम चरनन आगे।
मम मोहतिमिर छय होत, आतम गुण जागे॥ श्रीवासु०

(दीपं)

यह दशविधि धूप अनूप, खेऊँ गंधमई।
दशबन्धदहन जिनभूप, तुम हो कर्म-जई॥ श्रीवासु० ॥

(धूपं)

ले पिस्ता दाख बदाम, श्रीफल आदि घने।
तुम चरण जजूं गुणधाम, द्यो फल मोक्ष तने॥ श्रीवासु०

(फलं)

सजि वसुविधिदरब मनोग, अर्घ बनावतु हों।
वसुकर्म अनादि संजोग, ताहि नशावतु हों॥ श्रीवासु०॥

(अर्घम्)

अथ जयमाला।

चौपाई।

पांचौ बालयती तीर्थेश, तिनकी यह जयमाल विशेष।
मनवचकाय त्रियोग संभार, जे गावत पावत भव पार॥१॥

पद्धरी छन्द।

जय जय जय जय श्रीवासुपूज्य, तुम सम जग में नहिं और दूज।
तुम महालच्छ सुरलोक छार, जब गर्भमात माहीं पधार॥१॥

षोडश सपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
बहु हर्षधार दंपति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान ॥२॥
छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छै मास अगाऊ गर्भ आय, धनपति सुवरण नगरी रचाय ॥३॥
तुम मात महल आंगन मंझार, तिहुं काल रतनधारा अपार ।
बरसाई षट नव मास सार, धनि जिन पुरुषन नैनन निहार ॥४॥
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शत इन्द्र करत तुम चरण सेव ।
त्रय ज्ञानयुक्त तुम जन्म धार, आनंद भयो तिहुं जग अपार ॥५॥
तब ही ले चहु विधि देव सङ्ग, सौधर्म इन्द्र आयो उमङ्ग ।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, वन पांडुकशिल ऊपर सुथाप॥६
क्षीरोदधितैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय ।
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे मात नृत्य तांडव कराय ॥७॥
पुनि हर्ष धार हिरदै अपार, सब निर्जर रव जै जै उचार ।
तिस अवसर आनंद हे जिनेश, हम कहिबे समरथ नाहिं लेश॥८
जय जादोंपति श्रीनेमिनाथ, हम नमत सदा जुग जोड़ि हाथ ।
तुम ब्याहसमय पशुअन पुकार, सुन तुरत छुड़ाये दयाधार ॥९॥
करकङ्कण और शिरमौरबंद, सो तोड़ भये छिन में स्वछन्द ।
तब ही लोकांतिक देव आय, वैराग्यवर्द्धिनी थुति कराय ॥१०॥
ततछिन शिविका लायो सुरेन्द्र, आरूढ़ भये तापर जिनेंद्र ।
सो शिविका निज कंधन उठाय, सुर नर खग मिल तपवन ठराय
कचलौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगनमुद्रा सुधार ।

हरि केश लिए रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांही पधार।।१२।।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ।
जुगनाग जरत कीनो सुरक्ष, यह बात सकल जगमें प्रतक्ष।।१३।।
तुम सुरधनुसम लखि जग असार, तप तपत भये तनममत छार।
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन-सुमेरु नहि डगमगाय।।
तब शुक्लध्यान गहिखडग हाथ, अरि चारिघातिया करिसुघात।
उपजायो केवलज्ञान भान, आयो कुवेर हरि वच प्रमान।।१५।।
की समवसरण रचना विचित्र, तहं खिरत भई वाणी पवित्र।
मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय, सुनि निजनिज भाषा बोधपाय।।
जय वर्द्धमान अंतिम जिनेश, पायौ न अंत तुम गुण गणेश।
तुम चार अघाती करम हान, लहि मोक्ष स्वर्गसुख अचलथान।।
तबही सुरपति बल अवधि जान, सब देवन युत बहु हरष ठान।
सजि निजबाहन आयो सुतीर, जहँ परमौदारिक तुम शरीर १८
निर्वाण-महोत्सव कियौ भूर, लै मलयागिरि चंदन कपूर।
बहु द्रव्य सुगंधित सरससार, तामें श्रीजिनवर वपु पधार।।१९।।
निज अगिनकुमारनिमुकुटनाय, तिहंरतननिशुचिज्वाला उठाय।
तिस सिरमांही दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय।२०।
अति हर्ष थकी रचि दीपमाल, शुभ रत्नमई दशदिश उजाल।
पुनिगीतनृत्य बाजेबजाय, गुनगाय ध्याय सुरपति सिधाय।।२१।।
सो नाथ अबै जगमें प्रतक्ष, नित्त होत दीपमाला सुलक्ष।
हेजिन तुमगुणमहिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिकसुसार।।२२।।

तुम ज्ञानमाहिं तिहुंलोक दर्व, प्रतिबिंबित है चर अचर सर्व ।
लहि आतम अनुभव परमऋद्धि, भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध २३
हो बालजती तुम सबन एम, अचरज शिवकांतावरी केम ।
तुम परमशांतमुद्रा सुधार, किम अष्टकर्म रिपु को प्रहार ॥२४॥
हम करत बीनती बार बार, करजोड़ सुमस्तक धार धार ।
तुम भये भवोदधि पार पार, मोकों सुवेग ही तार तार ॥२५॥
'अगदास' दास यह पूर पूर, वसुकर्मशैल चक चूर चूर ।
दुखसहन दासकी शक्तिनाहिं, गहि चरणशरण कीजैनिवाह २६

दोहा

ब्रह्मचर्य सो नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ ।
पांचों बाल जतीन को, कीजै नित प्रति पाठ ॥

ओं ह्रीं श्रीपञ्चबालयतितीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

[इत्याशीर्वादः]

अहिछत्र पार्श्वनाथ स्तोत्र

जोगीरासे की चाल में

वदौं श्री पारस पद पंकज, पंच परम गुरु ध्याऊँ ।
शारदमाय नमो मन वच तन, गुरु गौतम शिर नाऊँ ॥
एक समय श्री पारस जिनवर, बन तिष्ठे वैरागी ।
बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्यागे आतम सों लव लागी ॥१॥
कल्प-द्रुमसम प्रभु तन सोहै, कर पल्लव तन साखा ।
अविचल आतम ध्यान पगे, प्रभु इक चितमन थिर राखा ॥

माता तात कमठ चर पापी, तपसी तप करि मूवो ।
अज्ञानी अज्ञानतपस्या-बल, करि सो सुर हूवो ॥२॥
मारग जात विमान रह्यो थिर, कोप अधिक मन ठान्यो ।
देखत ध्यानारूढ़ जिनेश्वर, शत्रु आपनो मान्यो ॥
भीषण रूप भयानक हगकर, अरुण वरण तन कांपै ।
मूसलधारा सम जल छोड़ै, अधर डशत तल चांपैं ॥३॥
अति अँधियार भयानक निशि अति, गर्जे घटा घनघोरै ।
चपला चपल चमकती चहुंदिशि, धीर न धीरज छोरै ॥
शब्द भयङ्कर करत असुरगण, अग्नि जाल-मुख छोड़ै ।
पवन प्रचंड चलाय भलत, यव द्रुमगण तृणसम तोड़ै ॥४॥
पवन प्रचंड मूसल जलधारा, निशि अति ही अँधियारी ।
दामिनी दमक चिक्कार पिसाचन, वन कीनो भयकारी ॥
अविचल ध्यान गम्भीर जिनेश्वर, थिर आसन बन ठाढ़े ।
पवन परीसहसों नहिं कांपै, सुरगिरिसम मन गाढ़े ॥५॥
प्रभु के पुण्य प्रताप पवन वश, फणपति आसन कंप्यो ।
अति भयभीत विलोक चहुँदिशि, चक्रित व्हैमन जंप्यो ॥
जाण्यो प्रभु उपसर्ग अवधिबल पद्मावति जुत धाओ ।
फण को छत्र कियो प्रभु के शिर, सर्वारिष्ट नशाओ ॥६॥
फणपतिकृत उपसर्ग निवारण, देखि असुर दुठ भाग्यो ।
लोकालोक विलोकन प्रभु के, तुरतहिं केवल जाग्यो ॥
समवशरण की रचना कारण, सुरपति आज्ञा दीनी ।

मणिमुक्ता हीराकंचनमय, धनपति रचना कीनी ॥७॥
तीनों कोट रचे मणि मण्डित, धूलिसाल बनाई।
गोपुर तुङ्ग अनूप विराजे, मणिमय गहरी खाई ॥
सरवर सजल मनोहर सोहैं, वन उपवन की शोभा।
वापी विविध विचित्र विलोकत सुरनर खग मनलोभा॥८॥
खेवें देव गलिन में घट भरि धूप सुगन्ध सुहाई।
मंद सुगन्ध प्रताप पवन वश दशहूँ दिशिमें छाई ॥
गरुडादिक के चिन्ह अलंकृत धुज चाहुँ ओर विराजैं।
तोरन बन्दनवारी सोहैं नवनिधि की छवि छाजैं ॥९॥
देवीदेव खड़े दरवानी, देख बहुत सुख पावैं।
सम्यकवंत महाश्रद्धानी, शिवसों प्रीति बढ़ावैं ॥
तीन कोटि के मध्य जिनेश्वर, गंधकुटी सुखदायी।
अन्तरीक्ष सिंहासन ऊपर, राजै त्रिभुवन राई ॥१०॥
मणिमय तीन सिंहासन शोभा, वरणत पार न पाऊँ।
प्रभु के चरण कमलतल सोभैं, मनमोदित सिर नाऊँ ॥
चान्द्रकांति समदीप्ति मनोहर, तीन छत्रछवि आखी।
तीन भुवन ईश्वरताके हैं, मानों वे सब साखी ॥११॥
दुन्दुभि शब्द गहिर अति बाजै, उपमा वरनि न जाई।
तीन भुवन जीवन प्रति भाखैं, जयघोषण सुखदायी ॥
कल्पतरूवर पुष्प सुगन्धित गंधोदक की वर्षा।
देवीदेव करे निशिवासर, भवि जीवन मन हर्षा ॥१२॥

तरु अशोक की उपमा वरणत, भविजन पार न पावैं।
रोग वियोगदुखी जन दर्शत, तुरतहिं शोक नशावैं॥
कुन्दपुहुपसम श्वेत मनोहर, चौसठि चमर दुराहीं।
मानोंनिरमलसुरगिरिकेतट, झरनाझरमकिझराहीं॥१३॥
प्रभुतन श्री भामण्डल की दुति, अद्भुत तेज विराजैं।
जाकी दीप्ति मनोहर आगे, कोटि दिवाकर लाजैं॥
दिव्य वचन सब भाषा गर्भित, खिरहिं त्रिकाल सुवानी।
'आसा' आस करे सो पूरण, श्री पारस सुखदानी॥१४॥
सुर नर जिय तिरयंच घनेरे, जिनवंदन चित आनैं।
वैरभाव परिहार निरन्तर, प्रीति परस्पर ठानै॥
दशहू दिशि निर्मल अति दीखैं, भयो है शोभ घनेरा।
स्वच्छ सरोवर जलकर पूरे, वृक्ष फरे चहुं फेरा॥१५॥
साली आदि खेती चहूंदिशि भई स्वमेव घनेरी।
जीवनबध नहिं होय कदाचित, यह अतिशय प्रभु केरी॥
नख अरु केश बढ़ैं नहिं प्रभु के, नहिं नैनन टमकारे।
दर्पणवत प्रभु को तन दीपै, आननचार निहारे॥१६॥
इन्द्र नरेन्द्र धनेन्द्र सबै मिलि धर्मामृत अभिलाषी।
गण धर पदशिरनायसुरासुर, प्रभुकी थुति अति भाषी॥
दीनदयाल कृपाल दयानिधि, तृषावन्त भवि चीन्हें।
धर्मामृत वर्षाय जिनेश्वर, तोषित बहुविधि कीन्हें॥१७॥
आरज खण्डविहार जिनेश्वर, कीनो भवि हितकारी।

धर्म चक्र आगौनि चलै प्रभु, केवल महिमा भारी ॥
पन्द्रह पांति कमल पन्द्रह जुग, सुन्दर हेम सम्हारे।
अन्तरीक्ष डग सहित चलें प्रभु, चरणाम्बुज तल धारे॥१८॥
मिटि उपसर्ग भये प्रभु केवलि, भूमि पवित्र सुहाई।
सो अहिछत्र थप्यो सुर नर मिल, पूजक को सुखदाई॥
नाम लेत सब विघन विनाशै, संकट क्षण में चूरे।
वन्दन करत बढ़ै सुख सम्पति, सुमिरत आशा पूरै॥१९॥
जो अहिछत्र विधान पढ़ै नित, अथवा गाय सुनावै।
श्री जिनभक्ति धरैं मन में दृढ़, मनवांछित फल पावै॥
जुगल वेद वसु एक अंक गणि, बुधजन वत्सर जान्यो।
मारगशुक्ल दशैं रविवासर, "आशाराम" बखान्यो॥२०॥

महार्घ और शान्ति पाठ

महाअर्घ।

मैं देव श्री अरहन्त पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं साधु पूजूं भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूं द्वादशांग रचे गनी।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन शिव हेत सब आशा हनी॥१॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा।
जजि भावना षोडश रतन त्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं।
पनमेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं॥२॥

कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरिनार गिरि पूजूं सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिव गेह के ॥

दोहा

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूजिये, बहु विधि भक्ति बढ़ाय ॥४॥

अथ शान्ति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें ।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथा विधि पूजा करें ॥
धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी ।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़ि लीने हाथ जी ॥१॥
दुख हरण मङ्गल करण आशा भरण जिन पूजा सही ।
यों चित्त में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही ॥
तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचूँ कहा ।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी यही इक वांछा महा ॥२॥
संसार भीषण विपिन में वसु कर्म मिल आतापियो ।
तिस दाह तैं आकुलित चित है शांति थल कहुं ना लियो ॥
तुम मिले शांति स्वरूप शांति करण समरथ जगपती ।
वसु कर्म मेरे शांत करदो शांति मय पंचम गती ॥३॥
जब लों नहीं शिव लहू तब लों देहु यह धन पावना ।
सत्संग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना ॥

तुम बिन अनंतानन्त काल गयो रुलत जग जाल मैं।
अब शरण आयो नाथ दुहुँ कर जोड़ नावत भाल मैं॥४॥

दोहा

कर प्रमाण के मान तैं गगन नपै किहिं अन्त।
त्यों तुम गुण वर्णन करत कवि नहिं पावे अन्त॥

अथ विसर्जन

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊं इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञान वश शास्त्रोक्त विधि तैं चूक कीनो पाठ में॥
सो होहु पूर्ण समस्त विधि बल तुम चरण की शरण तैं।
वन्दौं तुम्हैं कर जोरि के उद्धार जामन मरण तैं॥१॥
आवाहन स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथा विधि जानूं नहीं गुणखान जी॥
जो दोष लागो सो नशौ सब तुम चरण की शरण तैं।
वंदौं तुम्हैं कर जोरि के उद्धार जामन मरण तैं॥२॥
तुम रहित आवागमन आवाहन कियो निज भाव में।
विधि यथाक्रम निज शक्ति सम पूजन कियो अति चाव में॥
करहुं विसर्जन भाव ही मैं तुम चरण की शरण तैं।
वंदौं तुम्हैं कर जोरि के उद्धार जामन मरण तैं॥३॥

तीन भुवन तिहुँ काल में, तुम सा देव न और।
सुख कारन संकट हरन, नमहुँ युगल कर जोरि॥

समाप्त.

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र

की

रेलवे लाइन का नक़्शा

अम्बाला

देहरादून